॥ श्री गणेशाय नमः॥

केतु

केतु का स्वरूप :- केतु की दो भुजाएँ हैं। सिर पर मुकुट तथा शरीर पर काला वस्त्र धारण करते हैं। इनका शरीर धूमवर्ण का है। मुख विकृत है। अपने एक हाथ में गदा और दूसरे में वरमुद्रा धारण किये रहते हैं। नित्य गीधपर समासीन हैं। राहु-केतु का मूल शरीर एक था और वह दानव जाति का था। परन्तु ग्रहों में परिगणित होने के पश्चात् उनका पुनर्जन्म मानकर उनके नये गोत्र घोषित किये गये। इस आधार पर राहु पैठीनस गोत्र तथा केतु जैमिनि गोत्र का सदस्य माना गया।

संध्याबली, दीर्घाकृति, अन्त्यज जाति, सर्पादि का स्वामी, पुरुष, पापस्वभाव, कालवर्ण, वनचर स्वामी, प्रष्ठोदयी, वृद्धावस्था, ब्राह्मण, भूमिपति।

केतु ग्रह :- मीन का स्वामी है, वृश्चिक के १५ अंश पर उच्च तथा वृष के १५ अंश पर नीच का होता है। मूलत्रिकोण राशि सिंह है। महादशा ७ की होती है। शनि ४८ वें वर्ष में भाग्योदय कारक होता है।

केतु ग्रह :- गोचर में जन्म राशि से १, ३, ६, ९ और ११ वें स्थानों में वंशवृद्धि, सम्मान आदि शुभफल तथा २, ४, ५, ७, ८, ८, १२ में पारस्परिक कलह, मृत्युभय आदि अशुभ फल होता है।

केतु व्रत विधि :- मंगलवार के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहुर्त में उठकर नित्यकर्म करने के बाद केतु मन्त्र का जप करे एवं स्तोत्र का पाठ करे और सूर्यार्घ्य प्रदान कर, दिन में १२ से ३ बजे के अन्दर हलवा या चूरमा का भोजन करे, सूर्यास्त के बाद अन्न जल निषेध है, किन्तु गंगाजल आवश्यकतानुसार लिया जा सकता है। बुधवार के दिन सूर्यार्घ्य देने के बाद पारण करे।
केतु की अनुकूलता के लिए मृत्युंजय-जप तथा ध्वजा दान करना चाहिये।

दान पदार्थ :- कम्बल, कस्तूरी, सप्तधान्य, लहसुनिया, काला तिल, तिलतेल, नीले पूष्प, बकरी, शस्त्र, वरण, दक्षिणा आदि।

धारणार्थ रत्न :- लहसुनिया।

धारणार्थ औषधि :- असगंध।

देवता :- केतु ग्रह के अधिदेवता चित्रकेतु तथा प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं।

ध्यान :- धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृद्ध्रासनस्थो विकृताननश्च।
किरीटीकेयूरविभूषितो यः सर्वोस्तु मे केतुगणः प्रशान्त्यैः॥
(धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गादिनो विकृताननाः। गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥)

३९ केतु यन्त्रम्

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

तन्त्रसारोक्त मन्त्र :- ॐ केँ केतवे नमः। जपसंख्या १७,०००

तन्त्रोक्त बीजमन्त्र :- ॐ स्त्राँ स्त्रीँ स्त्रोँ सः केतवे नमः।

बीजमन्त्र (पञ्जिका):- ॐ ह्रीँ ऐँ केतवे नमः।

केतु गायत्री :- ॐ पद्मपुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्।

पौराणिक जप मन्त्र :- पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

वैदिकमंत्र विनियोग [१]:- केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्दात्रृषिः गायत्रीछन्दः केतुर्देवता अपेशसे इति बीजम् मर्य्या शक्तिः केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

अथ न्यास [२]:- ॐ मधु ऋषये नमः शिरसि।
ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे।
ॐ केतुदेवतायै नमः हृदये।
ॐ अपेशसे इति बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ मर्य्याशक्तये नमः पादयोः।

करन्यास [३]:- ॐ केतुकृण्वन् इत्यङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ केतवे तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ पेशोमर्य्या इति मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ समुषद्भिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ अजायथाः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास [४]:- ॐ केतुकृण्वन्निति हृदयाय नमः।
ॐ अकेतवे शिरसे स्वाहा।
ॐ पेशोमर्य्या शिखायै वषट्।
ॐ अपेशसे कवचाय हुम्।
ॐ समुद्भिर्नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ अजायथा इत्यस्त्राय फ़ट्।

वैदिक जप मन्त्र :- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या अपेशसे। सुमुषद् भिरजा यथाः॥
॥ ॐ केतवे नमः॥

केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम्

अस्य श्रीकेतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः गायत्रीछन्दः केतुर्देवता केतुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

केतुः कालः कलयिता धूम्रकेतुर्विवर्णकः। लोककेतुर्महाकेतुः सर्वकेतुर्भयप्रदः॥ १॥
सदा रुद्रप्रियो रुदः क्रूरकर्मा सुगण्धधृक्। पलाश-धूम-संकाशश्चित्र-यज्ञोपवीतधृक्॥ २॥
तारागणविमर्दी च जैमिनेयो ग्रहाधिपः। पञ्चविंशति नामानि केतोर्यः सततं पठेत्॥ ३॥
तस्य नश्यन्ति बाधाश्च सर्वाःकेतुप्रसादतः। धनधान्यपशुनां च भवेद्वृद्धिर्न संशयः॥ ४॥

॥ इति श्रीस्कन्दपुराणोक्तं केतुपञ्चविंशतिनामस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

केतुकवचस्तोत्रम्

अस्य श्री केतुकवचस्तोत्रस्य त्र्यंबक ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः केतुर्देवता कं बीजं नमः शक्ति केतुरिति कीलकं केतुप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

केतुः करालवदनं चित्रवर्णं किरीटिनम्। प्रणमामि सदा केतुं ध्वाजाकारं ग्रहेश्वरम्॥ १॥
चित्रवर्णः शिरः पातु भालं धूम्रसमद्युतिः। पातु नेत्रे पिंगलाक्षः श्रुति मे रक्तलोचनः॥ २॥
घ्राणं पातु सुवर्णाभश्चिबुकं सिंहिकासुतः। पातु कंठं च मे केतुः स्कंधौ पातु ग्रहाधिपः॥ ३॥
हस्तौ पातु सुरश्रेष्ठ कुक्षिं पातु महाग्रहः। सिंहासनः कटिं पातु मध्यं पातु महासुरः॥ ४॥
ऊरू पातु महाशीर्षो जानुनी मेऽतिकोपनः। पातु पादौ च मे क्रूरः सर्वाङ्ग नरपिंगलः॥ ५॥
य इदं कवचं दिव्यं सर्वरोगविनाशनम्। सर्वशत्रुविनाशनम् च धारणाद्विजयी भवेत्॥ ६॥

॥ इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे केतुकवचस्तोत्रम् सम्पूर्णम्॥

---

[१] **विनियोग**-- विनियोग करते समय एक छोटे ताम्बे के चम्मच या खर या आम के पत्ते से लुटिया में से गंगाजल युक्त पानी उठाए रखे और विनियोग के मन्त्र का अन्तिम शब्द *"**विनियोगः**"* बोलते समय चम्मच का पानी एक छोटी प्याली या प्लेट में उडल दे इस चम्मच को *"**आचमनी**"* कहते हैं।

[२] **अथ न्यासः** --तत्त्व मुद्रा से अर्थात् मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अग्र भाग को मिलाकर सिर आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... नमः शिरसि।
ॐ ..... नमः मुखे।
ॐ ..... नमः हृदये।
ॐ ..... नमः गुह्ये।
ॐ ..... नमः पादयोः।

[३] **करन्यासः** करन्यास एक ही समय में दोनो हाथों से करे।

ॐ ..... ऽङ्गुष्ठाभ्यां नमः। (तर्जनी द्वारा अँगुठे के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... तर्जनीभ्यां नमः। (अँगुठे से तर्जनी के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... मध्यमाभ्यां नमः। (अँगुठे से मध्यमा के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... ऽनामिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से अनामिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... कनिष्ठिकाभ्यां नमः। (अँगुठे से कनिष्ठिका के मूल से अग्रभाग तक स्पर्श करे)
ॐ ..... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (हथेलियों और उनके पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श करे)

४ **हृदयादिन्यासः** दाहिने हाथ की पांचो अंगुलियों से हृदय आदि का स्पर्श करे।

ॐ ..... हृदयाय नमः।

ॐ ..... शिरसे स्वाहा।

ॐ ..... शिखायै वषट्।

ॐ ..... कवचाय हुम्। (दोनों भुजा अर्थात् कन्धे के पास स्पर्श करे)

ॐ ..... नेत्रत्रयाय वौषट्। (दोनों नेत्रों और फिर ललाट के मध्य भाग का स्पर्श करे)

ॐ ..... ऽस्त्राय फ़ट्। (दायें हाथ को सर के ऊपर बायीं ओर से पीछे ले जाकर सर के दायीं ओर से आगे की ओर लाये, फिर बायीं हाथेली पर दायें हाथ की तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये)

Please send corrections to pawan2303@gmail.com